शिक्षा के उन्नयन हेतू नवाबी भोपाल में किए गए प्रयासों का अध्ययन

नेहा सिन्हा , रिसर्च स्कालर इतिहास ,बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल

सारांश :

भोपाल रियासत में नवाब एवं बेगम के द्वारा समय–समय पर शिक्षा के विकास की निरन्तरता को बनाये रखने के लिए अनेक प्रयास किए गए थे गरीब मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती थी जिसका प्रमुख उद्देश्य गरीब तथा मेधावी छात्र–छात्राओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना तथा उनके मार्ग में आने वाले व्यवधान को दूर करना था। मुस्लिम राज्यों में भोपाल रियासत की गणना हैदराबाद के बाद दूसरे स्थान पर की जाती थी। भोपाल रियासत में नवाबों का शासन था। भोपाल के प्रथम शासक नवाब दोस्त मोहम्मद खान थे। नवाब नजर मोहम्मद खान के निधन के पश्चात् भोपाल में महिला नवाब शासिकाओं के युग का प्रादुर्भाव हुआ। भोपाल के चहुमुखी विकास में इन महिला शासिकाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया। भारत के मध्य भाग में स्थित भोपाल रियासत में महिला नवाबों ने न केवल शासन किया वरन् भोपाल के इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी तथा आधुनिक शिक्षा प्रणाली का शुभारम्भ कर भोपाल के आधुनिकीकरण में अहम भूमिका निभायी ।

शब्द कुंजी : शिक्षा ; चहुमुखी विकास ; छात्रवृत्तियाँ ; महिला शासिकाओं ; मेधावी छात्र ।

परिचयः–

Education is simply the soul of a society
at it passes from one generation to another"

(Gilbert K.Chesterton)

किसी भी राज्य का मापदण्ड वहाँ के निवासियों के चरित्र एवं नैतिक मूल्यों पर निर्भर करता है। और इनके निर्माण में शिक्षा का महत्तवपूर्ण योगदान होता है। भारतीय समाज में प्रारंभ से ही शिक्षा के लिये चेतना व्यापत थी। ऋगवैदिक काल में समाज में धार्मिक एवं लौकिक दोनों प्रकार की शिक्षा दी ज ाती थी। गुरूओं के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिये शिष्य दूर–दूर से आते थे। इस समय शिक्षा पाठशालाओं में नहीं वरन् गुरूकुल में दी जाती थी। शिक्षा के प्रमुख विषय देव विद्या, बह्य विद्या, देवजन विद्या, भूत विद्या, नक्षत्र विद्या, वेद, इतिहास, व्याकरण, दर्शन, कल्प, तर्कशास्त्र आदि थे। महाकाव्य काल में भी शिक्षा का महत्तव था, तथा स्त्रियों की शिक्षा का भी प्रावधान थ। महाजनपद काल में बौद्ध विहार शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली में बौद्ध संघ का विशेष योगदान था यहाँ धामिक व लौकिक शिक्षा के साथ–साथ शिल्प व यान्त्रिक शिक्षा भी दी जाती थी। मौर्यकाल में बाह्मणों व पूरोहितों द्वारा शिक्षा का कार्य किया जाता था। तक्षशिला, वाराणासी, उज्जैन, के विश्वविद्यालय शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। गुप्तकाल में पाट्लीपुत्र, पद्मावती, मथूरा, नासिक, वाराणासी, वलभी शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। परमार शासकों में राजाभोज का काल स्थापत्य, कला एवं विद्या के क्षेत्र में प्रमुख रहा है।

नवाबी भोपाल में शिक्षा का विकास

मध्यकाल में हुये मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप अनेक शिक्षण–संस्थायें नष्ट हो गये थे। यद्यपि कुछ शासकों द्वारा विशेषकर अकबर और जहांगीर के द्वारा प्रबुद्ध नीति अपनाये जाने पर शिक्षा को पुनः बल मिला था। मुस्लिम शिक्षा प्रणाली मुख्यतः मजहबी थी। भोपाल के नवाबी क्रम में नवाब सुल्तानजहां बेगम का स्थान सर्वोच्च है। वह जनहित में समर्पित शासिका थी। उनके द्वारा किये गये कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के क्षेत्र में विकास है। नवाब सुल्तानजहां बेगम ने शिक्षा रूपी मशाल के प्रकाश से न केवल रियासत भोपाल को बल्कि रियासत के बाहर के अनेक स्थानों को भी प्रकाशवान किया। वह अलीगढ़ विश्वविद्यालय की प्रथम चांसलर भी नियुक्त की गई नवाब सुल्तानजहां बेगम स्वयं भी एक विदुषी महिला थी तथा एक कुशल लेखिका भी थी। उन्होंने दफ्तर–ए–सुल्तानी का पुनः गठन किया तथा तुजुक–ए–बाबरी की तरह ही तुजुक–ए–सुल्तानी (आत्मकथा) लिखी। इसके अतिरिक्त उन्होंने गौहर–ए–इकबाल, हयात–ए–कुदसी, हयात–ए–सिकन्दरी, हयात–ए–शाहजहांनी, अखतरूल इकबाल, आदि पुस्तकें लिखी। आधुनिक युग की नींव सही अर्थों में नवाब सुल्तानजहां बेगम के शासनकाल में ही रखी गई थी। जब वाइसराय लार्ड मिन्टो अपनी यात्रा पर भोपाल आये थे तो यहाँ के शैक्षणिक विकास से बहुत प्रभावित हुये थे। नवाब सुल्तानजहां बेगम के प्रयासों के फलस्वरूप भोपाल में शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार हुआ था। उनके प्रयासों से शीघ्र ही भोपाल में अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या 600 पार कर गई थी। विभिन्न टेक्निकल स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी की संख्या 100 तक पहुँच गई। यह शिक्षण संस्थाओं में शुरू हुई नई विकास प्रक्रियाओं का शुरूआती दौर था। इस काल में भोपाल में कई स्कूलों व मदरसों की स्थापना की गई थी जिनमें– सुल्तानियों स्कूल एलेक्ज़ेन्ड्रा हाई स्कूल, ब्रिजिशिया कन्या पाठशाला, सिकन्दरी स्कूल, उबेदिया स्कूल, रशीदिया स्कूल, हमीदिया स्कूल, किण्डर गार्टन स्कूल, वहीदिया स्कूल, आदि प्रमुक्त थे। इसके साथ ही रियासत में नर्सिंग कला को विकसित करने के उद्देश्य से ''लेडी मिन्टो नर्सिंग स्कूल'' की स्थापना की गई थी।

नवाब सुल्तानजहां बेगम द्वारा भोपाल रियासत में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सफल प्रयास किये गये जब उन्होंने भोपाल के शासन की बागडोर अपने हाथों में संभाली तब इन स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई, और यह संख्या 1600 तक पहुँच गई। सुल्तानियाँ स्कूल की 4 लड़कियाँ पहली बार इलाहबाद

विश्वविद्यालय की मिडिल स्कूल की परीक्षा में भाग लेने गई। 1912–1913 ई. में जहांगीरिया हाई स्कूल के 6 लड़के 11वीं की परीक्षा के लिए लिये चयनित हुये थे, जिसमें 5 विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त हुई थी। नवाब सुल्तानजहां बेगम के शासनकाल के 6वें–7वें वर्ष में स्कूलों में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 3565 तक पहुँच गई। नवाब सुल्तानजहां बेगम ने रियासत में महिलाओं को शिक्षित करने तथा उन्हें आर्थिक रूप स्वावलंबी बनाने की दिशा में विशेष रूप से प्रयास किये। उन्होंने गरीब, विधवा औरतों के लिए विशेष व्यवसाय स्कूल स्थापित किया। जहाँ प्रतिदिन काम में आने वाली वस्तुओं की शिक्षा दी जाती थी, ताकि वह अपना गुज़ारा स्वयं कर सकें। रियासत भोपाल में योग्य महिला शिक्षिकाओं की कमी को दूर करने के लिये नवाब सुल्तानजहां बेगम ने सुल्तानिया गर्ल्स स्कूल के एफ हिस्से में महिला प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना, करवाई तथा लड़कियों के रहने के लिये एक बोर्डिंग हाऊस का भी निर्माण किया।

शिक्षण संस्थाओं के अतिरिक्त भी महिलाओं के विकास एवं उत्थान के लिए नवाब बेगम ने रियासत भोपाल ने ''प्रिंस ऑफ वेल्स लेडिस क्लब'' की स्थापना करवाई। नवाब सुल्तानजहां बेगम एक योग्य शासिका होने के साथ–साथ एक कुशल लेखिका भी थी, उन्होंने आधुनिक विषयों पर पुस्तकों को लिख कर अपनी प्रजा को आधुनिक बनाने का प्रयास किया। नवाब सुल्तानजहां बेगम का व्यक्तित्व तरक्की पसन्द ख्यालों से परिपुष्ट था, उन्होंने पाश्चात्य शैक्षणिक ढाँचे को अपनाया तथा आधुनिक विषय जैसे विज्ञान, इतिहास, समाज सुधार, नीति शास्त्र पर लिखने वाले विद्वानों का न सिर्फ सम्मान किया वरन् उन्हें संरक्षण भी प्रदान किया। अतः नवाब सुल्तानजहां बेगम के शासनकाल को शैक्षणिक विकास की दृष्टि से स्वर्ण युग कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

निर्धन छात्रो की शिक्षा के विकास के लिए प्रदान की जाने वाली प्रमुख छात्रवृत्तियां

शिक्षा को उसकी ऊँचाईं तक पहुँचाने वाली नवाब सुल्तानजहां बेगम निर्धन 12 मई सन् 1930 ई. को हुआ, अपने शासनकाल में ही इन्होंने राजसत्ता अपने तृतीय पुत्र नवाब हमीदुल्ला खाँ के सौंप दी थी अतः नवाब हमीदुल्ला खां ने भी रियासत में शिक्षा के सर्वागिण विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। उनके शासन काल में भोपाल में कई स्कूल, कॉलेजों का निर्माण किया गया– जिनमें मॉडल हाई स्कूल, हमीदिया हायर सेकेण्ड्री स्कूल, कैम्ब्रिज स्कूल, हमीदिया कॉलेज, आदि की स्थापना की गई। धार्मिक शिक्षा प्रदान करने हेतु स्थापना की गई। पूर्व में स्थापित विद्यालयों के कुशल संचालन हेतु उदारता पूर्वक धन प्रदान किया जाता था। राज्य के बजट में शिक्षा एवं छात्रवृत्तियों के लिए बड़ी–बड़ी राशियाँ आवंटित की जाती थीं। वर्ष 1942–43 ई. में बिल्किसिया नर्सिंग स्कूल के लिए 70/– रू. तथा सुल्तानिया गर्ल्स स्कूल में 270/– रू. मासिक कुल छात्रवृत्ति आवंटित की गई थी। उच्च तथा तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने हेतु 16,000/– रू. वार्षिक छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती थी। सन् 1942 ई. में भोपाल में अध्ययन करने वाले

लड़कों की कुल संख्या 11,224 तथा लड़कियों की संख्या 1482 थी। 1942 ई. में एलेक्ज़ेन्ड्रा–जहांगीरिया हाई स्कूल को दिया जाने वाला वार्षिक भत्ता 30120/– रू. था तथा शहरयार हाई स्कूल सीहोर को 26036/– रू., सुलेमानिया स्कूल को 8068/– रू. तथा वहीदिया टेक्निकल स्कूल को 6894/– रू. वार्षिक भत्ते के रूप में प्रदान किये गये थे। 1950–1951 में राज्य में 272 प्राथमिक, 24 माध्यमिक तथा 6 हाई स्कूल थे, जिनमें 23458 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। नवाह शाहजहां बेगम के काल में जहांगीरिया स्कूल में पढ़ने वाले गरीब एवं मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती थी।

नवाब सुल्तानजहां बेगम के काल में अनेक विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई थी, तथा अनेक होनहार विद्यार्थी जो गरीबी के कारण अपनी पढ़ाई जारी नही रख पाते थे। वह सभी विद्यार्थी इससे लाभान्वित हुये थे। नवाब सुल्तानजहां बेगम ने ऐसे विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति बांटने का निश्चय किया था। तथा प्रतिवर्ष छात्रवृत्ती के लिए 10,000 रूपये निर्धारित किये गये थें। ये छात्रवृत्तियाँ मुख्य रूप से चिकित्सा, विज्ञान, अभियांत्रिकी, कृषि कानूनी और विज्ञान अन्य क्षेत्रों के छात्रों को योग्यता प्राप्त करने तथा उन्हें और उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यूरोपीय देशों में जाने के उद्देश्य से सर्मथ बनाने के लिए दी जाती थी। नवाब सल्तानजहां बेगम के पूर्व काल में ही बहुत से विद्यार्थी छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कर अलीगढ़ में पढ़ रहे थे, जबकि कुछ एकाउन्टेन्ट शिक्षा का अध्ययन करने या तो इंग्लैण्ड जा चुके थे, या जाने के लिए पूर्णतः तैयार थे। सन् 1912 में राज्य के बजट विवरण में 10,000 रूपये कुल छात्रवृत्ति के लिये आवंटित किये गये थे। दफ्तर–ए–इंशा से प्राप्त जानकारी के आधार पर नवाब सुल्तानजहां बेगम के काल में सीहोर में अध्ययन करने वाले दो ब्राह्महणों को शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई थीं। 1923 ई. में साहाबज़ादा ब्रिगेडयर जनरल नवाब उबेदुल्ला खान के द्वारा एक कोष की स्थापना की गई थी, तथा 6,00,000 रूपये ज्ञान की विभिन्न शाखाओं व शैक्षणिक छात्रवृत्ति के लिए आवंटित किये गये थे, तथा इस बोर्ड का नाम **उबेदुल्ला खान स्कॉलरशिप फण्ड** रखा गया था।

1942–43 के राज्य बजट रिपोर्ट के आधार पर इस वर्ष शहरयार स्कूल, सीहोर में एण्डोमेन्ट छात्रवृत्ति फंड के लिए 250 रूपये आवंटित किये गये थे। तथा 1942–43 ई. में बिल्किसिया नर्सिंग स्कूल के लिये कुल छात्रवृत्ति 70 रूपये तथा सुल्तानिया गर्ल्स हाई स्कूल के लिये 270 रूपये कुल छात्रवृत्ति आवंटित की गई थी।नवाब हमीदुल्ला खान के द्वारा शहर व तहसील में पढ़ने वाले गरीब परंतु योग्य विद्यार्थियों को वार्षिक 12,000 रू. छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती थी। उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने हेतु राज्य के बाहर शिक्षा प्राप्त कर रहे समस्त विद्यार्थियों को राज्य की ओर से 16,000 वार्षिक छात्रवृत्तियां प्रदान करने का प्रावधान था। तथा शहर व तहसील में विद्याअर्जन करने वाले समस्त गरीब छात्रों को मुफ्त में पाठ्य–पुस्तकें भी प्रदान की जाती थी।

नवाब साहब के शासन काल में राज्य सरकार के द्वारा 6 पब्लिक स्कूलों को दान दिया गया था। यह स्कूल थे।

- सिटी संस्कृत पाठशाला
- जैन दिगम्बर पाठशाला
- जैन श्वेताम्बर पाठशाला।
- कन्या पाठशाला।
- सीहोर कन्या पाठशाला।

अक्टूबर 1934 ई. में एलेक्ज़ेन्डर, मॉडल व शहरयार स्कूल में पढ़ने वाले ऐसे सभी विद्यार्थियों को जिनके अभिभावक किसान थे तथा जिनकी मासिक आय 50/– रू. से कम थी ऐसे सभी विद्यार्थियों की फीस माफ कर दी गई थी।[8]

1901 से 1950 ई. के मध्य प्रदान की जाने वाली प्रमुख छात्रवृत्तियों के प्रकार–

- तकनीकि शिक्षा के लिए प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- नर्सिंग स्कूल के लिए दी जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- गरीब एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- एकाउन्टेन्ट शिक्षा से संबंधित विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- तहसीलों में पढ़ने वाले गरबी छात्रों को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- शहरों में पढ़ने वाले गरीब, मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- कर्म वार्षिक आमदनी वाले किसानों के बच्चों को शिक्षा के लिए प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।
- स्कॉलरशिप फण्ड द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां।

निष्कर्ष :–

भोपाल रियासत के नवाबों एवं बेगम के द्वारा समय–समय पर शैक्षणिक विकास के लिये राज्य की ओर से आर्थिक अनुदान प्रदान तो किया जाता था ही साथ ही साथ राज्य में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने एवं शिक्षा का अधिक से अधिक विकास करने के लिये राज्य के बजट में शिक्षा को प्रमुखता प्रदान की जाती थी। 1912 ई. में एक लाख रूपया प्रत्येक वर्ष शिक्षा के लिये आवंटित किये जाते थे। 1926 ई. में हर साल 14,000 रूपये की बढ़ोत्तरी स्कूल फण्ड के लिये कर दी गई इस प्रकार रियासत में शिक्षा को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया तथा छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये राज्य के बजट में शिक्षा के लिये विशेष अनुदान प्रदान किया जाता था।

संदर्भिका

1. बेगम सुल्तानजहां– हयात–ए–शाहजहांनी, पृ. सं–39
2. अली एस.ए.– भोपाल पास्ट एण्ड प्रिजेन्ट,
3. मित्तल कमला – हिस्ट्री ऑफ भोपाल स्टेट, पृ.सं–89
4. वही, पृ.सं–86
5. Budget Report Government of Bhopal – 1942-43
6. मित्तल कमला, पृ.सं–117
7. वही – पृ.सं–90–91
8. उपरोक्त, पृ.सं–117
9. भोपाल पास्ट एण्ड प्रिजेन्ट, परिशिष्ट –23, डस्ग्ग्ग्ग
10. वही –
11. मिततल कमला, पृ.सं–119
12. एनुअल एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, गवर्मेन्ट ऑफ भोपाल – 1917–18
13. हमीद रजिया – भोपाल दपर्ण, पृ.सं–67
14. Zuberi Mohammed Amin – Asr-I-Jadid, Page No. 28
15. मोहम्मद खालिद – दास्तान–ए–भोपाल, पृ.सं–178
16. भोपाल दपर्ण, पृ.सं–67
17. भोपाल पास्ट एण्ड प्रिजेन्ट,
18. वही, परिशिष्ट – 24
19. मित्तल कमला, पृ.सं–89